Journal of Civil Engineering and Environmental Technology
p-ISSN: 2349-8404; e-ISSN: 2349-879X; Volume 3, Issue 9; October-December, 2016, pp. 750-751
© Krishi Sanskriti Publications
http://www.krishisanskriti.org/Publication.html

सल्तनतकालीन स्थापत्यकला का इतिहास

राखी पूनिया

एम.ए., नैट (इतिहास) पी.एच.डी. रिसर्च स्कॉलर, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सारांशः *दिल्ली सल्तनत की स्थापना भारतीय इतिहास की एक विशिष्ट घटना थी। जिसने भारत के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व धार्मिक सभी पक्षों को व्यापक रूप से प्रभावित किया। मुसलमानों के साथ लम्बे सम्पर्क से भारत में एक ऐसी संस्कृति विकसित हुई जिसमें स्वदेशी एवं इस्लामी दोनों परम्पराओं के तत्व समविष्ट थे। इस मिश्रित संस्कृति का प्रभाव तत्कालीन वास्तुकला में भी परिलक्षित होता है। वास्तव में तुर्कों के भारत आगमन से भारतीय स्थापत्य कला में एक नवीन युग की शुरूआत हुई। वे भारत में स्थापत्य की जो शैली लाए वह न तो पूर्णरूप से इस्लामी थी और न ही अरबी। इस स्थापत्य शैली के प्रमुख गुण थे–1) गुम्बज 2) ऊँची मीनारें 3) मेहराब 4) भूमिगृह आदि। दिल्ली के सुल्तान चाहते थे कि उनकी इमारतें मध्य–एशिया अथवा ईरान की इमारतों का प्रतिरूप हों, परन्तु वह इसमें असफल रहे। क्योंकि उनके द्वारा निर्मित इमारतों पर देशी कला–परम्पराओं का प्रभाव रहा, जिससे स्थापत्य की एक नवीन शैली विकसित हुई, जो न तो पूर्ण रूप से विदेशी थी और न शुद्ध भारतीय।*

इस्लामी स्थापत्य शैली में खाली स्थानों को मेहराब–गुंबद आदि के द्वारा भरा जाता था जबकि स्थानीय शिल्प शैली में रिक्त स्थान पर शहतीरों को आयताकार लगाया जाता लेकिन सजावट दोनों ही शैलियों की प्रमुख विशेषता थी। इस्लाम में जीवित वस्तुओं का चित्रण विषद्ध था इसलिए लिखावट एवं ज्यामितीय डिजायनों का अंकन अधिक प्रचलित था। अरबेस्क विधि को सल्तनतकालीन भवनों में अलंकरण के रूप में विशेष तौर पर प्रयुक्त किया जाता था।

सुल्तानों की नई–नई इमारतों के निर्माण में विशेष रूचि रही थी। उनके द्वारा निर्मित प्रमुख इमारत है–कुव्वत–उल–इस्लाम मस्जिद, अढाई दिना का झोपड़ा, कुतुब मीनार, सुल्तानगढ़ी, लालमहल, अलाई दरवाजा, जमातखाना मस्जिद, फिरोजशाह कोटला नगर और किला, सिकन्दर लोदी का मकबरा।

मूलशब्द : स्थापत्यकला, संस्कृति, गुम्बज, मेहराब, शहतीर, ज्यामितीय डिजायन, अरबेस्क

भूमिका

दिल्ली सल्तनत का समय 1206–1526 ई0 तक रहा। और इस काल में दिल्ली पर पॉच वंशों के सुल्तानों ने शासन किया। इनमें से चार वंश मूल रूप से तुर्क थे जबकि पॉचवां वंश अफगान था। ये पॉच राजवंश थे–1) मामूलक या दास वंश (1206–90 ई0) 2) खिलजी वंश (1290–1320 ई0) 3) तुगलक वंश (1320–1414 ई0) 4) सैयद वंश (1414–51 ई0) 5) लोदी वंश (1451–1526 ई0)। मुगलों ने 1526 में दिल्ली सल्तनत का अंत करके मुगल वंश की नींव रखी।

सल्तनतकालीन स्थापत्यकला की विशेषताएँ

1. हिन्दू एंव मुस्लिम शैली का मिश्रण : सुल्तान अपनी इमारतों का निर्माण मध्य एशिया एंव ईरान की इमारतों की तर्ज पर करना चाहते थे। परन्तु इसके लिए उन्होंने भारतीय शिल्पकारों को नियुक्त किया। जिससे इनकी इमारतों में दोनों शैलियों का समन्वय हो गया।
2. ज्यामितीय डिजायनों का प्रयोग : सल्तनत काल में सजावट के लिए ज्यामितीय डिजायनों का प्रयोग किया जाता था।
3. कुरान की आयतें : भवनों की साज–सजावट के लिए कुरान की आयतों का प्रयोग दरवाजों, छतों, चौखटों व ताख आदि विभिन्न भागों पर किया जाता था। ये आयतें भवनों पर भाषा के रूप में होती थी। यह लिपि 'कूफी' कहलाती थी।
4. मेहराब और गुंबद : मुस्लिम स्थापत्य कला में खाली स्थानों को भरने के लिए मेहराब–गुंबद आदि का प्रयोग किया जाता था। सुल्तानों ने विशेष रूप से नुकीली मेहराब का प्रयोग किया।

भवन–निर्माण सामग्री

प्राचीन भारत में इमारतों के निर्माण के लिए मिट्टी, पत्थर, लकड़ी व ईंटों आदि का प्रयोग होता था। परन्तु सल्तनत काल में चूना–गारें का प्रयोग किया जाने लगा, जिसके मुख्य अवयव चूना व सुर्खी होते थे। चूने के दो प्रमुख स्रोत थे–जिप्सम और बजरी। भवनों में प्लास्टर करने के लिए जिप्सम का ही प्रयोग किया जाता था।

मामलूक (गुलाम) वंश की स्थापत्य कला

गुलाम वंश के संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक ने सर्वप्रथम एक तुर्की मस्जिद का निर्माण किया। जिसका नाम था–'कुव्व–उल–इस्लाम'। इसका निर्माण रायविभौरा के किले के स्थल पर हुआ था। तुर्कों के आगमन से पहले यहॉ सत्ताइस मंदिरों का निर्माण किया जा रहा था और उन्होंने इन सत्ताइस हिन्दू व जैन मंदिरों को तोड़कर उनके अवशेषों पर इसका निर्माण किया। अपनी आवश्यकतानुसार उन्होंने इसमें थोड़ा बदलाव कर इसको मस्जिद का रूप दे दिया। जिसकी वजह से इसमें हिन्दू और मुस्लिम दोनों कलाओं का

समन्वय देखने को मिलता है। इसके बाद कुतुबुद्दीन ऐबक ने अजमेर में 'अढ़ाई दिन का झोपड़ा' नामक मस्जिद का निर्माण कराया। डॉ. ए.एल.श्रीवास्तव के अनुसार यह इमारत वास्तव में एक संस्कृत विद्यालय थी जिसका निर्माण सम्राट विग्रहराज ने करवाया था। और इसके ऊपरी भागों को तोड–फोड़कर गुबंद तथा मेहराबें बना दी गई। तीसरी महत्त्वपूर्ण इमारत 'कुतुबमीनार' थी। कुतुबमीनार का निर्माण 1197 ई0 में कुतुबुद्दीन ऐबक ने आरम्भ किया था परन्तु 1232 ई0 में इल्तुतमिश द्वारा पूरा किया गया। इसे प्रसिद्ध सूफी संत 'कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी' की स्मृति में बनवाया गया था। कुतुबमीनार के अतिरिक्त इल्तुतमिश ने 'सुल्तानगढ़ी' का भी निर्माण करवाया था। जो उसके बड़े पुत्र नासिरूद्दीन महमूद का मकबरा था। बलबन ने कुतुबमीनार के निकट अपना स्वयं का मकबरा बनवाया था, जो शुद्ध इस्लामी पद्धति में निर्मित भारत का प्रथम मकबरा तथा दास वंश की अंतिम इमारत थी।

ख़िलजी वंश की स्थापत्य कला

अलाउद्दीन ख़िलजी ने सीरी महल, हजरत सितूल महल, जमात खाना मस्जिद, अलाई दरवाजा आदि अनेक इमारतें निर्मित कराई। पर इनमें सबसे प्रसिद्ध है 'अलाई दरवाजा'। अलाई दरवाजा पहली ऐसी इमारत है जिसमें केवल इस्लामी पद्धतियों का प्रयोग किया गया है। अलाई दरवाजा के सम्बन्ध में मार्शल ने लिखा है कि ''अलाई दरवाजा इस्लामी स्थापत्य कला के खजाने का सबसे सुन्दर हीरा है''। यह लाल पत्थर से निर्मित है परन्तु कहीं–कहीं संगमरमर का भी प्रयोग हुआ है।

खिलजीकालीन स्थापत्यकला की मुख्य विशेषता है–

1. वैज्ञानिक पद्धति से निर्मित मेहराबों का प्रयोग जो आकार में नुकीली है।
2. मेहराबों के साथ वैज्ञानिक पद्धति से बनाए गए गुम्बद।

तुगलक वंश की स्थापत्य कला

तुगलक काल में निर्मित इमारतें दास वंश व खिलजी वंश के समान सुन्दर नहीं थी। इसका मुख्य कारण तुगलक सुल्तानों की आर्थिक कठिनाई थी साथ ही वे अपने धार्मिक विचारों में काफी कट्टर थे। तुगलक वंश के केवल तीन शासकों ने ही स्थापत्य कला में रूचि दिखाई–गियासुद्दीन तुगलक, मुहम्मद बिन तुगलक व फिरोजशाह तुगलक।

गियासुद्दीन तुगलक ने तुगलकाबाद व अपने स्वयं के मकबरे का निर्माण करवाया। जिसकी मुख्य विशेषता ढलवॉ बाहरी दीवारें हैं। मुहम्मद बिन तुगलक ने जहांपनाह नगर तथा आदिलाबाद का किला बनवाया। फिरोजशाह तुगलक द्वारा निर्मित प्रसिद्ध इमारतें–फिरोजशाह कोटला नगर व किला। फिरोजशाह ने होजखास नामक पहाड़ी पर अपना व अपने प्रधानमंत्री 'खान–ए–जहां तेलंगानी' का मकबरा बनवाया। 'खान–ए–जहां' तेलंगानी का मकबरा दिल्ली में निर्मित 'प्रथम अष्टभुजाकार' मकबरा है।

तुगलक कालीन स्थापत्य काल की मुख्य विशेषताएँ–

1. भवन निर्माण सामग्री में मुख्यतः खुरदरे पत्थर का प्रयोग
2. दीवारें व बुर्ज अधिकतर अंदर की ओर झुके होते थे।
3. सलामी पद्धति का प्रयोग
4. अष्टभुजाकार मकबरों का उदय

सैयद व लोदी वंश की स्थापत्य कला

सैयद व लोदी सुल्तान स्थापत्य कला पर विशेष ध्यान नहीं दे पाए। अतः इनके समय में विशाल इमारतों का निर्माण नहीं हो पाया। इस समय केवल मकबरों का ही अधिक निर्माण हुआ। इसलिए लोदीकाल को 'मकबरों का काल' कहा जाता है। इस काल की मुख्य इमारतें हैं–मुबारकशाह सैयद, मुहम्मदशाद सैयद और सिकंदर लोदी का मकबरा। व सिकन्दर लोदी के प्रधानमंत्री द्वारा निर्मित 'मोठ की मस्जिद'।

लोदीकालीन स्थापत्य कला की विशेषताएं

1. लोदीकालीन मकबरे उद्यानों के मध्य में निर्मित हैं।
2. लोदी सुल्तानों द्वारा अष्टभुजी मकबरे बनवाए गए।
3. लोदी अमीरों द्वारा चतुर्भुजी मकबरे निर्मित हुए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मध्यकालीन भारत : भाग–1 (750–1540)–हरिश्चन्द्र वर्मा
2. Indo Islamic Architecture – Ziyaud – Din A. Desai
3. Architecture in Medival India – Monica Juneja
4. The Delhi Sultanate – L.P. Sharma
5. Delhi Sultanate (711 to 1526) – Ashirbadilal Srivastav
6. Indian Architecture (Islamic Period) – Percy Brown